



PANDIT MANILAL NAG

Pandit Manilal Nag is a well-known sitarist from West Bengal.

2. Born on 16th August, 1939, in Bankura District of West Bengal, Pandit Manilal's forefathers were distinguished sitarists of their times. He hails from a family of musicians, traditionally associated with Vishnupur Gharana of Bengal which is generally accepted around 400 Years old. He was put in art of playing sitar at the age of 5 by his father Late Shri Gokul Chandra Nag who was also an eminent musician adept in techniques of playing many kinds of musical instruments. After 10 years of rigorous training under the intensive care of his father, Pandit Manilal imbibed the rudiments of well balanced presentation of various aspects of music. He made his debut appearance in the All India Music Conference at Kolkata in 1953, accompanied by Pandit Samta Prasad on Tabla. For the last six decades, he has been performing in "Akashvani " as well as "Doordarshan" as a Top Grade Artist and has also performed innumerable times in the National Programme of Music & Akashvani Sangeet Sammelan.

3. One of the most popular and sought after concert artiste of India, Pandit Manilal has been regularly performing in music conferences all over India & abroad. He was Invited to U.K. and other European Countries through the I.C.C.R. in the year 1973 in the Festival of India. In the same year he also visited U.S.A. and Canada. In 1979, he was invited as delegate for participation in Indian Ocean Art Festival to mark the 150th Anniversary of the Government of Australia and in 1985 he performed at Japan in the Indo — Japan festive Concerts organised by Government of India. He was the first Indian Musician to perform in the 50th Anniversary of Bath Music Festival, at UK in the year 1999. Besides, he has also performed throughout U.S.A., Canada, U.K., Germany, France, Italy, Switzerland, Spain, Austria, Japan in various private concerts during the last 30 years.

4. As a Guru, Pandit Manilal has trained a record number of 1500 students in his career of six decades to propagate Indian Classical Music. He was also attached with the Instrumental Music Division of ITC Sangeet Research Academy, Kolkata from 2005 to 2011. He has gained international recognition providing practical lecture demonstrations in various music schools and universities of excellence such as International School of Music, Venice, Italy, Vishwa Bharati (Shantiniketan), Rabindra Bharati University, Kolkata, Benaras Hindu University. To promote young generation in Indian Classical Music in the far East, he has established a school of learning sitar at Tokyo, Japan. He has also released various Music albums from several music companies in India and abroad.

5. Apart from performances and training, Pandit Manilal has also featured on various panels and expert committees of Central Audition Board of Prasar Bharati, New Delhi, University Grants Commission, New Delhi, Cultural Talent Search Scholarship Scheme of Ministry of Culture and in West Bengal Academy of Dance, Drama, Music and Visual Arts.

6. Pandit Manilal Nag has received various honours and awards including prestigious Sangeet Natak Academy Award in the year 2001; Senior Fellowship Award from Ministry of Culture in 2005; Honorary Gold Medal from Asiatic Society Kolkata in 2008; West Bengal State Academy Award for his contribution in Music; "Allauddin Purashkar" by Government of West Bengal in 2012; "Sangeet Maha Samman" in 2015; Highest Civilian Award of Bengal, "Bangobibhusan" in 2015; ITC Sangeet Samman; Sangeet Ratna Samman; Doverlane Sangeet Samman; Vitasta Award; Koser Award from Pracheen Kala Kendra etc.





पंडित मणिलाल नाग

पंडित मणिलाल नाग पश्चिम बंगाल के एक सुप्रसिद्ध सितारवादक हैं।

2. 16 अगस्त, 1939, में पश्चिम बंगाल के बांकुरा जिले में जन्मे, पंडित मणिलाल के पूर्वज अपने समय के विशिष्ट सितारवादक थे। वह एक संगीतज्ञ परिवार से ताल्लुक रखते हैं, जो पारंपरिक रूप से लगभग 400 साल पुराने बंगाल के विष्णुपुर घराने से जुड़ा हुआ है। उनको 5 साल की उम्र में उनके पिता स्वर्गीय श्री गोकुल चंद्र नाग द्वारा सितार बजाने की कला से परिचय कराया गया। उनके पिता एक प्रख्यात संगीतकार थे जो अनेक संगीत वाद्ययंत्र बजाने में पारंगत थे। अपने पिता के गहन संरक्षण में 10 वर्ष तक के कड़े प्रशिक्षण के बाद, पंडित मणिलाल ने संगीत की विभिन्न बारीकियों को भली–भांति आत्मसात किया। उन्होंने 1953 में कोलकाता में अखिल भारतीय संगीत सम्मेलन में अपनी पहली प्रस्तुति दी। इस प्रस्तुति में उनके साथ तबले पर पंडित समता प्रसाद थे। पिछले छह दशकों से, वह एक शीर्ष ग्रेड कलाकार के तौर पर ''आकाशवाणी'' के साथ–साथ ''दूरदर्शन'' में कार्यक्रम पेश कर रहे हैं और संगीत के राष्ट्रीय कार्यक्रम और आकाशवाणी संगीत सम्मेलन में भी अनगिनत प्रस्तुति दे चुके हैं।

3. भारत के सबसे लोकप्रिय और प्रसिद्ध कलाकारों में एक, पंडित मणिलाल नियमित रूप से पूरे भारत और विदेशों के संगीत सम्मेलनों में कार्यक्रम प्रस्तुत करते आ रहे हैं। उन्हें भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद के माध्यम से यू.के. और अन्य यूरोपीय देशों में वर्ष 1973 के दौरान आयोजित भारत महोत्सव में आमंत्रित किया गया था। उसी वर्ष उन्होंने अमेरिका और कनाडा का भी दौरा किया। 1979 में, उन्हें ऑस्ट्रेलिया सरकार की 150 वीं वर्षगांठ के अवसर पर हिंद महासागर कला महोत्सव में भाग लेने के लिए प्रतिनिधि के रूप में आमंत्रित किया गया था। 1985 में उन्होंने जापान में इंडो–जापान फेस्टिव कॉन्सर्ट में भारत सरकार द्वारा आयोजित कार्यक्रम में प्रस्तुति दी। वह वर्ष 1999 में यूके में बाथ म्यूजिक फेस्टिवल की 50 वीं वर्षगांठ में प्रदर्शन करने वाले पहले भारतीय संगीतज्ञ थे। इसके अलावा, उन्होंने पिछले 30 वर्षों के दौरान पूरे यूएसए, कनाडा, यूके, जर्मनी, फ्रांस, इटली, स्विट्जरलैंड, स्पेन, ऑस्ट्रिया, जापान में विभिन्न निजी संगीत कार्यक्रमों में भी प्रस्तुति दी। ।

4. एक गुरु के रूप में, पंडित मणिलाल ने भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचार के लिए छह दशकों के अपने संगीत जीवन में रिकॉर्ड 1500 छात्रों को संगीत की शिक्षा दी है। वह 2005 से 2011 तक आईटीसी संगीत रिसर्च एकेडमी, कोलकाता के वाद्य संगीत प्रभाग से भी जुड़े रहे। उन्होंने इंटरनेशनल स्कूल ऑफ म्यूजिक, वेनिस, इटली, विश्व भारती (शांतिनिकेतन), रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय, कोलकाता, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय जैसे संगीत के अनेक उत्कृष्ट संगीत स्कूलों और विश्वविद्यालयों में व्यावहारिक व्याख्यान देकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाई है। सुदूर पूर्व में भारतीय शास्त्रीय संगीत में युवा पीढ़ी को बढ़ावा देने के लिए, उन्होंने टोक्यो, जापान में स्कूल ऑफ लर्निंग सितार की स्थापना की। भारत और विदेश की कई संगीत कंपनियों से उनके विभिन्न संगीत एल्बम भी जारी हुए हैं।

5. सितारवादन और प्रशिक्षण के अलावा, पंडित मणिलाल ने प्रसार भारती, नई दिल्ली के सेंट्रल ऑडिशन बोर्ड, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली, संस्कृति मंत्रालय और पश्चिम बंगाल नृत्य, नाटक, संगीत और दृश्य कला अकादमी में सांस्कृतिक प्रतिभा खोज छात्रवृत्ति योजना के अनेक पैनलों और विशेषज्ञ समितियों में भी शामिल रहे हैं।

6. पंडित मणिलाल नाग को विभिन्न सम्मान और पुरस्कार मिल चुके हैं, जिनमें वर्ष 2001 में प्रतिष्ठित संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार; 2005 में संस्कृति मंत्रालय का वरिष्ठ फैलोशिप पुरस्कार; 2008 में एशियाटिक सोसाइटी कोलकाता से मानद स्वर्ण पदक; संगीत में उनके योगदान के लिए पश्चिम बंगाल राज्य अकादमी पुरस्कार; 2012 में पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा ''अलाउद्दीन पुरस्कार''; 2015 में ''संगीत महा सम्मान''; 2015 में बंगाल का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार, ''बंगोबिभुषन''; आईटीसी संगीत सम्मान; संगीत रत्न सम्मान; डोवरलेन संगीत सम्मान; विटस्टा पुरस्कार; प्रवीन कला केंद्र से कोसर पुरस्कार आदि शामिल हैं।